'बालभाव'में रेखांकित चित्र (भाग २)

(धर्मसंदेश देनेवाले श्रीकृष्णके चित्र, अनुभूतियोंसहित)

अनुक्रमणिका

१. श्रीमती उमा रविचंद्रन्द्वारा बनाए व्यष्टि और समष्टि भाव दर्शानेवाले चित्र एवं उन चित्रोंकी विशेषताएं २०

१ अ. भगवान श्रीकृष्णकी सीख दर्शानेवाले चित्र २०

१ अ १. भगवान श्रीकृष्णद्वारा 'कराग्रे वसते लक्ष्मी...' इस श्लोकद्वारा एक पितासमान दिनचर्यासे संबंधित आचार सिखाना २०

१ अ २. श्रीकृष्णद्वारा श्री गणेशकी भावपूर्ण पूजा करना सिखाना २३

१ अ ३. प्रतिदिन देवताकी शक्ति उसके तत्त्वके अनुसार कार्यरत रहती है, यह भगवान श्रीकृष्णद्वारा दिखाना २५

१ अ ४. भगवान श्रीकृष्णद्वारा समृद्ध स्वर्गभूमि दिखाकर, भोगभूमि एवं योगभूमि में अंतर समझाना २६

१ अ ५. भारतका 'नवरात्रोत्सव' तथा पाश्चात्यका 'हैलोवीन' ३०

१ आ. ईश्वरका समष्टि कार्य दर्शानेवाला चित्र ३२

१ आ १. मन, बुद्धि व अहं को व्यापनेवाले ईश्वरके तीन पग ! ३२

१ आ २. साधकोंद्वारा आरंभ किया गया कलियुगका समुद्रमंथन ३४

१ आ ३. जो हिंदू महिलाएं द्रौपदीकी स्थितिमें हैं, उनकी रक्षा

१ आ ४. कलियुगसे सत्ययुगकी ओर होनेवाला संक्रमण ३९

१ आ ५. एक बालकद्वारा पांडुरंगकी मूर्तिपर छाता तानना ! ४४

१ इ. श्रीकृष्णकी कृपासे सेवा होनेकी अनुभूतिसंबंधी चित्र ४६

१ इ १. संगणकसे खेलते (संगणकपर सेवा करते) समयका चित्र ४६

१ इ २. कठिन परिस्थितिका सामना करते समय भवान श्रीकृष्ण के उपरनेके पीछे छिपकर आश्रय लेना ४८
१ इ ३. एक मंदिर-न्यासीद्वारा निकाले जानेपर, श्रीकृष्णद्वारा के उपरनेके पीछे छिपकर आश्रय लेना ५१
१ इ ४. बालभावका चित्र बनाते समयका रिकॉर्डिंग करनेका नियोजन होना, उपनेत्र न पहनकर भी शांतिसे चित्र साकार होना, मनमें किसी भी प्रकारकी मूर्त कल्पना न होते हुए भी श्रीकृष्णने ऊपर उठाया है, ऐसा चित्र साकार होना ५४
१ इ ५. बालभावका चित्र श्रीकृष्णने ही बनाया है, इसकी साक्षी बनकर स्वयं उसकी ओर आश्चर्यसे देखते रहना ५५
१ इ ६. प्रत्यक्ष श्रीकृष्ण चित्र बनवानेके लिए सामने खडे हैं ५६
१ इ ७. श्रीकृष्णके नेतृत्वमें हो रहे धर्मयुद्धमें सहभागी होकर श्रीकृष्णका स्वेद (पसीना) पोंछनेकी सेवा करना ५७
१ इ ८. क्षात्रभाव जागृत होकर हाथमें तलवार लेना ५९
१ ई. रामनवमीके दिन जयपुरके श्री लक्ष्मीनारायणका चित्र ६१
१ उ. सनातनकी कुछ आनंददायक घटनाएं दर्शानेवाले चित्र ६४
१ ऊ. प.पू. डॉक्टरजीसे संबंधित अनुभूतियां दर्शानेवाले चित्र ७१
२. श्रीमती उमा रविचंद्रन्‌के चित्र देखकर सनातनके साधकोंको हुई अनुभूतियां तथा इन चित्रोंसे उन्हें प्रतीत हुई श्रीमती उमा रविचंद्रन्‌की आध्यात्मिक गुणविशेषताएं ७८
३. श्रीमती उमा द्वारा बनाए चित्रोंकी विशेषताएं व उन चित्रोंके विषय में सनातनकी साधिका-चित्रकारोंको प्रतीत हुई अनुभूतियां ८०
४. श्रीमती उमा द्वारा बनाए चित्र देखकर गोपियोंको हुई अनुभूतियां ८३
५. श्रीमती उमा रविचंद्रन्‌के चित्रोंके विषयमें प.पू. डॉ. आठवलेजी और सनातनके विविध संतोंके उद्‌गार ८७

भूमिका

‘भाव’ शब्दसे ही अध्यात्मविश्व आरंभ होता है । साधक एवं संतों का ईश्वरके प्रति उत्कट भाव विविध माध्यमोंसे व्यक्त होता है । इस अभिव्यक्तिसे ही अनेक बार अमर कलात्मक रचनाएं जन्म लेती हैं । संत ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम जैसे अनेक संतोंके उत्कट भावसे निर्मित रचनाएं अक्षय मिठाससे भरी हैं । यह वाङ्मय भाषा, व्याकरणादि दृष्टिसे भी परिपूर्ण पाया जाता है । उत्तम साधककी भावावस्था भी विविध कलाओंके माध्यमसे व्यक्त होती है और ऐसी कलानिर्मिति निर्दोष एवं आनंददायी होती है । सनातन संस्थाकी चेन्नईकी साधिका श्रीमती उमा रविचंद्रन्‌के चित्र इसका उत्कृष्ट उदाहरण है ।

श्रीमती उमाद्वारा बनाए गए बालभावयुक्त चित्रोंकी अनेक आध्यात्मिक विशेषताएं हैं, उदा. इन चित्रोंसे सेवाभाव व्यक्त होना, चित्र देखनेवालेमें कृतज्ञभाव जागृत होना इत्यादि । उनके चित्र कलाकी दृष्टिसे भी अत्यंत सुंदर हैं और उनमें उत्कृष्टताके अनेक लक्षण दिखाई देते हैं, उदा. ‘श्रीकृष्णके स्वेदबिंदु (पसीना) पोंछनेकी सेवा करनेवाली बालिका’के चित्रमें श्रीकृष्णके माथेका पसीना पोंछनेके लिए बालभावयुक्त साधिका अपने तलवोंपर खडी है । प्रत्येक चित्रमें इस प्रका-रकी अनेक सूक्ष्मताएं (बारीकियां) हैं ।

आध्यात्मिक मिठाससे परिपूर्ण और बालकोंकी निर्मलताका अनुभव देनेवाले ये चित्र बच्चे-बूढे सभीको अवश्य भाएंगे, साथ ही साधनामें भाववृद्धिके लिए सहायक होंगे ।

श्रीमती उमा रविचंद्रन् (उमा अक्का) की विशेषताएं

१. श्रीमती उमाके चित्रोंमें उनका भगवान श्रीकृष्णके प्रति बालभाव झलकता है । विविध चित्र बनानेके उपरांत उन्हें कुछ चित्रोंके विषयमें सारणियोंके रूपमें आध्यात्मिक ज्ञान भी प्राप्त हुआ है । यह न केवल सनातन संस्थामें, अपितु भूतलपर इस प्रकारकी कलात्मक अभिव्यक्तिका एकमात्र उदाहरण है !

२. ‘श्रीमती उमा अक्काद्वारा बनाए चित्र, चित्रोंके माध्यमसे व्यक्त अवर्णनीय ‘बालभाव’ इत्यादि इतिहासका एकमात्र उदाहरण है !

३. कुछ भक्तिमार्गी साधक बालभावमें, तथा कुछ गोपीभावमें रहते हैं । दिनभर वे उसी भावमें रहते हैं । श्रीमती उमा अक्काकी विशेषता यह है कि वे चित्र बनानेतक बालभावमें रहती हैं । तदुपरांत पारिवारिक और धर्मजागृतिका उत्तरदायित्व संभालते समय तदानुरूप अवस्थामें रहती हैं । इसलिए श्रीमती उमा व्यष्टि (व्यक्तिगत) और समष्टि (समाजगत) दोनों प्रकारकी साधना कर सकती हैं । इसीलिए उनकी प्रगति शीघ्र हो रही है ।'

- संकलनकर्ता